Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य को कँवलनयन कपूर की देन

Pooja Rani*

Research Scholar, Ph.D. Hindi, South India Hindi Publicity Meeting, Madras

----------X----------

साहित्यकार समाज का महत्त्वपूर्ण घटक होता है। वह सामान्य व्यक्तियों से अधिक संवेदनशील एवं कल्पनाशील होता है। आदमी की अपेक्षा उसकी अनुभूति अधिक गहन एवं व्यापक होती है। साहित्यकार एक ओर सामाजिक विकृतियों–विषमताओं का यथार्थ चित्राण करते हुए उसके प्रति आक्रोश व्यक्त करता है, तो दूसरी ओर अपनी रचनाओं के माध्यम से एक सुखी समाज की स्थापना का भी प्रयास करता है।

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तित्व, उसके जीवन और अनुभवों से पृथक् करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि साहित्यकार के विचार एवं भावनाएँ उसके अन्तर्मन से निकलती है, जो उससे कृतित्व में दिखाई पड़ती है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब ही उसकी रचना धर्मिता में दिखाई देता है। साहित्यकार अपने हृदय में जो अनुभव करता है, रचना की पृष्ठभूमि उसी में निर्मित होती है। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके साहित्य के उत्स और प्रेरणा को समझने में सहायक होता है। रामबाबू गुप्त का भी मानना है कि व्यक्तित्व पूर्णता का एक आदर्श है, यह आत्मज्ञान है।

व्यक्तित्व शब्द अपने आप में सारगर्भित है, जिसमें जीवन के मूर्त्त एवं अमूर्त्त रूप घनीभूत रूप में संयुक्त रहते हैं। हिन्दी में 'व्यक्तित्व' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के पर्सनेलिटी शब्द के पर्याय रूप में होता है। व्युत्पत्तिपरक दृष्टि से 'पर्सनेलिटी' शब्द लेटिन शब्द 'पार्सोना' से विकसित हुआ है। भाषाविज्ञों ने शब्दकोषों में इसका आत्यान्तिक अर्थ 'व्यक्तित्व' ही माना है। इस प्रकार अब व्यक्तित्व से अभिप्राय व्यक्ति की आकृति और उसके भीतर 'स्व' रूप तथा बाह्य वस्तुओं के प्रति प्रतिक्रियात्मक विचारधारा के समन्वित रूप से ही लिया जाने लगा है।

व्यक्तित्व :

श्री कँवलनयन कपूर महान् साहित्यकार है। वह प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी है। वह पुरानी रूढ़ियों में विश्वास नहीं करते, वह प्रगतिशील विचारधारा से सम्बन्धित है। कहा जाता है कि व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। श्री कँवलनयनकपूर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर तत्कालीन वातावरण का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। निर्भीक, स्पष्टवक्ता, हँसमुख, आज़ाद तबीयत, उन्मुक्त व्यवहार और अनायास ही देखने और मिलने वालों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेने वाले एक चुम्बकीय व्यक्तित्व का नाम है–श्री कँवलनयन कपूर।

हरियाणा के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रंगधर्मी डॉ॰ कँवलनयन कपूर का जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के रावलपिण्डी नामक प्रसिद्ध नगर में सन् 1944 में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री नत्थुराम कपूर और माता का नाम मीराबाई कपूर था। आपके पिता एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और आपकी माता मीराबाई कपूर एक पुण्यात्मा और भक्ति–भाव से परिपूर्ण महिला थीं। सन् 1947 में भारत–विभाजन होने पर आप पाकिस्तान को छोड़कर स्थाई रूप से दिल्ली आकर बस गए। विकट आर्थिक परिस्थितियों के कारण समस्त परिवार को संघर्षमय जीवन व्यतीत करना पड़ा। आपके पिता जी ने अपने दो पुत्रों के सहयोग से संघर्षों से जूझते हुए अपने आदर्श और स्वाभिमान को बनाए रखा।

शिक्षा :

कँवलनयन कपूर की प्रारम्भिक शिक्षा राजकीय हायर सैकेण्डरी स्कूल दिल्ली में हुई। आपने बी॰ए॰ ऑनर्स हिन्दी की शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज से प्राप्त की। इसी कॉलेज से आपने सन् 1967 में एम॰ए॰ हिन्दी की शिक्षा पूर्ण की। इस शिक्षा प्राप्ति काल में ही आपने डॉ॰ नगेन्द्र, डॉ॰ दशरथ ओझा, डॉ॰ विजयेन्द्र स्नातक, डॉ॰ महीप सिंह, डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल जैसे महान् गुरुओं से संस्कार प्राप्त किए। एम॰ए॰ के पश्चात् आपने सन् 1973 में कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्रा से **'नई कहानी में सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण'** विषय पर पीएच॰डी॰ की उपाधि प्राप्त की।

अध्यापन कार्य : एक शिक्षक के रूप में डॉ॰ कपूर का अपने शिष्यों के प्रति अत्यन्त आत्मीयता का भाव रहा है। प्रतिभा को निखारने के लिए आप हर सम्भव सहयोग देते रहे हैं। डॉ॰ कपूर ने 1967 में मुकुन्द लाल नेशनल कॉलेज में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया था और सन् 2005 में सेवानिवृत्त हुए। आपके लिए शिक्षण मात्र व्यवसाय ही नहीं रहा अपितु विद्यार्थियों का हित चिंतन आपके अध्यापन कार्य का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है।

प्रकृति–प्रेम : डॉ॰ कपूर प्रकृति के कुशल चितेरे हैं। वह प्रकृति में मन की शान्ति को ढूंढते हुए प्रतीत होते

www.ignited.in

हैं, इनका निज गृह भी प्रकृति के सौन्दर्य का अनुपम उदाहरण है।

सम्मान एवं पुरस्कार : डॉ॰ कँवलनयन कपूर को समय–समय पर विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता रहा है। सहस्राब्दी हिन्दी सम्मेलन में भी आपको प्रशस्ति पत्र और मैडल देकर सम्मानित किया गया। हरियाणा साहित्य अकादमी संस्था ने आपको दो बार सम्मानित किया। 'पंछी–तीर्थम', 'शव–पूजा' और 'प्रकृति–पर्व' आपके पूर्णकालिक नाटक हैं, जिन्हें विशेष लोकप्रियता मिली। ये सभी नाटक समाज पर एक जोरदार कटाक्ष है, जो कि गिरते सामाजिक मूल्यों और भ्रष्ट राजनीति पर आधारित है। आपके नाटक कई बार मंच पर तथा नाट्य संस्थाओं में विभिन्न रंगों के साथ मंचित किए गए हैं। 8 सितम्बर 1995 को राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने इनकी रचना 'इदं शरीरं' का विमोचन कर इन्हें सम्मानित किया।

साहित्यिक प्रेरणा :

डॉ॰ कँवलनयन कपूर को साहित्य–सृजन की प्रेरणा अपने बड़े भाई रामदास से प्राप्त हुई। इनके बड़े भाई रामदास को लिखने का बहुत शौक था। डॉ॰ कपूर भी अपने भाई से प्रेरित होकर साहित्य–सृजन में लग गए।

कृतित्व :

साहित्य और समाज का अभिन्न संबंध होने के कारण किसी भी साहित्यकार का साहित्य उसके समाज और जीवन के अनुभवों का प्रतिबिम्ब होता है। कँवलनयन कपूर के साहित्य के बारे में यह बात बिल्कुल सही है। वे जीवन की सम्पूर्णता के कवि, नाटककार व उपन्यासकार है। भारतीय जीवन के अनेक प्रश्न और पीड़ाओं से उपजी उनकी हर रचना एक सीधे–सादे लेकिन संवेदना में गहरे धंसे जागरूक आदमी का संजीदा बयान है। साहित्य सृजन में अनवरत व सक्रिय कपूर की उपस्थिति गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से उल्लेखनीय है। आपका रचना–संसार वैविध्यपूर्ण है। आपकी साहित्यिक कृतियाँ निम्नलिखित हैं।

नाटक :

1. पंछी–तीर्थम्, हरमन पब्लिशिंग हाऊस, नारायणी, नई दिल्ली, 1988
2. शव–पूजा, माधव प्रकाशन, दिल्ली, 2000
3. प्रकृति–पर्व, माधव प्रकाशन, दिल्ली, 2000

लघु नाट्य साहित्य :

1. आओ मेरे साथ, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1990
2. रक्तजीवी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1988
3. कथा लंका दहन की, सुख प्रकाशन, प्रोफेसर्ज कॉलोनी, यमुनानगर, 1982
4. यात्रा और यात्रा, मुक्ता प्रिन्टर्स, बी.सी. बाजार, अम्बाला छावनी, 1982
5. जलघर, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1987

काव्य–संग्रह :

1. बौणियाँ किरणां और उदास गुलमोहर, श्री प्यारेलाल गुप्त, पी.एल. प्रिंटस, लुधियाना, 1976
2. एक समन्दर मेरे अन्दर, माधव प्रकाशन, ग्लो टाईम प्रिन्टर्स, यमुनानगर, 2001

उपन्यास :

1. भारत–सम्राट, जाह्नवी पत्रिका में, धारावाहिक रूप में छपा, 1967–68

अनुवादित ग्रन्थ :

1. श्री दुर्गा, सुख प्रकाशन, प्रोपफेसर्ज कॉलोनी, यमुनानगर, 1946
2. इदं शरीरं, हरमन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1994
3. उपनिषद् श्री, माधव प्रकाशन, यमुनानगर, 2003

हिन्दी साहित्य जगत् में कँवलनयन कपूर जी का नाम बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में लिया जाता है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं में आस्था और विश्वास रखने वाले और उनका अनुकरण करने वाले कपूर जी का पूर्ण व्यक्तित्व उनके कृतित्व में सम्पूर्ण अक्षरशः परिलक्षित होता है। इनके साहित्य में धर्म, अर्थ, राजनीति, समाज, इतिहास दर्शन सभी का वर्णन किया गया है। ऐसा कोई भी क्षेत्रा नहीं है जो इनकी लेखनी से अनछुआ रह गया हो, इसलिए कँवलनयन कपूर जी को युगचेता साहित्यकार कहा जाता है। कँवलनयन कपूर जागरूक, विकासशील और सारग्रही व्यक्ति हैं। इसलिए यह प्राचीन और नवीन का तालमेल बनाते चलते हैं। इनके साहित्य में कल्पना और यथार्थ, जीवन–दर्शन, अनुभूति, अभिव्यक्ति, शब्दों की मर्यादा और स्वतन्त्रता का सामंजस्य है। कँवलनयन कपूर एक क्रांतिकारी, प्रबुद्ध साहित्यकार हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा होने के कारण उनकी प्रत्येक रचना में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व को उसके कृतित्व से अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाया उसकी रचनाओं में देखी जा सकती है।

कँवलनयन कपूर के साहित्य में जहाँ समसामयिक समस्याओं को दिखाया किया गया का वर्णन है, वहीं इन समस्याओं से निपटने का यथा सम्भव हल भी बताया गया है। यह सर्वप्रथम समस्या का गहन अध्ययन करते हैं फिर यथोचित उसे दूर करने का प्रयास करते हैं। सच्चा और तटस्थ आत्मविश्लेषण कँवलनयन कपूर के व्यक्तित्व की अनूठी विशेषता है। आप व्यक्ति, समाज, परिवेश और संसार को अपने सामने रखकर साहित्य रचना करते हैं।

इनके नाट्य साहित्य में जहाँ एक ओर समाज में फैले भ्रष्टाचार, शोषण, पूंजीपति वर्ग के दबदबे, धर्म के बदलते स्वरूप, दाम्पत्य जीवन के बदलते अर्थों को स्थान दिया है, वहीं दूसरी ओर पौराणिक सन्दर्भों को नए आयामों में प्रतिपादित किया है। नाटककर ने इस तथ्य की सशक्त अभिव्यक्ति की है कि आज के भ्रष्ट वातावरण में भूखे पेट, फटे कपड़ों, ज़िंदगी की लाचार उम्मीदों और कीचड़ से भरी टिमटिमाती आँखों में टूटे–पूफटे सपनों के लिए, गरीब जनता न्याय के लिए तारीखों पर तारीखें भुगतती हैं, किन्तु उसे न्याय नहीं मिलता। दूसरी ओर तथाकथित समाज का अमीर वर्ग दोषी होने पर भी केवल पैसे व स्वार्थी राजनीति के बल पर न्याय को खरीद लेता है।

इसके साथ ही कँवलनयन कपूर ने अपने नाट्य साहित्य में समाज में व्याप्त भ्रष्ट वातावरण के माध्यम से गांधी जी के सपनों को टूटते हुए भी दिखाया है। समाज में फैली अव्यवस्था के कारण दलित और गरीब वर्ग का जीवन और अधिक कष्टमय हो गया है। समाज में हर ओर लूटमार, धोखाधड़ी, गुण्डागर्दी और कालाबाजारी का साम्राज्य पफैला हुआ है। वास्तव में नाटककार का उद्देश्य तन–मन से बौने व बर्फ के समान ठंडे बुत जैसे चुप रहने वाले समाज के प्रतिनिधियों की नग्नता को उजागर करना है ताकि समाज में सुधार हो। उनका माना है कि अगर शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए, भ्रष्टाचार को रोकने के लिए, राजनीतिक अव्यवस्था को दूर करने और शान्ति स्थापित करने के लिए क्रान्ति की आवश्यकता है तो क्रान्ति होनी ही चाहिए।

कँवलनयन कपूर जहाँ समाज में फैले भ्रष्ट वातावरण का विरोध अपने नाट्य साहित्य में जोरदार शब्दों में करते हैं, वहीं इनका कवि हृदय प्रेम जैसे कोमल अहसास की अभिव्यक्ति अपने काव्य साहित्य में करता है। इनके काव्य साहित्य में प्रेम के साथ–साथ समाज के विविध पक्षों को उभारा गया है, जिसमें मनुष्य के बनावटीपन राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता। धार्मिकता वैयक्तिकता संवेदना प्रेम, नारी, सांस्कृतिक चेतना और दार्शनिकता को उभारा गया है। इनका मानना है कि भौतिकतावादी इस युग में मानव संवेदना शून्य होता जा रहा है। अपने स्वार्थों के कारण मानव वह स्वार्थी और पलायनवादी हो गया है। स्वार्थी प्रेम ने लोगों के बीच न भरने वाली खाई उत्पन्न कर दी है। आज मानव बिना संघर्ष के सब कुछ पा लेना चाहता है। धन की अंधी दौड़ में वह इतना व्यस्त है कि उसके पास इतना समय नहीं है कि वह किसी दर्द को समझ सके। इसलिए कँवलनयन कपूर अपने काव्य साहित्य में लोगों को मूर्ख बनने के लिए कहते हैं उनका मानना है कि आज जिस देश में हम सांस ले रहे हैं, चल फिर रहे है, वह विकासशील देश हैं। इस देश की अस्सी प्रतिशत जनता गरीब है और अभाव का जीवन जी रही है। पूंजीपति वर्ग सत्ता और शक्ति पर काबिज है तथा नेता लोग भी इनके कहे अनुसार रीति–रिवाज का निर्माण करते हैं। नेता अपनी तिजोरियों को भरने लगे हुए हैं तथा कुर्सी के लालच ने इतनी मंहगाई बढ़ा दी है, जिससे रुई तथा मनुष्य के भाव में कोई अन्तर नहीं रह गया है। आपसी प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना लगभग समाप्त हो गई है, चारों ओर चुप्पी और सन्नाटा पफैला हुआ है, लालची प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति इतना गिर चुका है कि वह जानता ही नहीं है कि वह ज़िन्दा है या मृत। लोगों की धर्म के प्रति आस्था कम होती जा रही है। आज धर्म उन्नति के शिखर की ओर बढ़ रहा है, परन्तु सदुपयोग की अपेक्षा उसका दुरुपयोग अधिक किया जा रहा है। धार्मिक स्थल दुराचार के अड्डे मात्र बनकर रह गये हैं। यही कारण है कि लोगों की आस्था धर्म के प्रति कम होती जा रही है। धार्मिक पाखण्डों का चित्रण, संस्कृति का ह्रास, मानव की स्वार्थी मनोवृत्ति का प्रशासनिक अव्यवस्था का चित्रण और राजनीतिक भ्रष्टाचार को सजीवता से चित्रित किया गया है। अपने काव्य साहित्य में उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि क्रान्ति के बिना समाज में पफैली बुराइयों को दूर नहीं किया जा सकता।

कँवलनयन कपूर ने जितनी ख्याति काव्य और नाट्य साहित्य के क्षेत्रा में पाई। उतनी ही सफलता उपन्यास के क्षेत्र में भी अर्जित की है। 'भारत सम्राट' इनका एक बाल उपन्यास है, इसकी विषयवस्तु ऐतिहासिकता पर आधारित है। इसमें सिकन्दर के आक्रमण के समय भारत की स्थिति, चाणक्य और चन्द्रगुप्त द्वारा नंद शासन की समाप्ति, चन्द्रगुप्त का सैल्यूकस से युद्ध और सन्धि को मुख्य आधार बनाया गया है, इस उपन्यास में कँवलनयन कपूर ने उस समय की नारी की स्थिति को वर्णित किया है। उस समय नारी की स्थिति अच्छी थी, महिलाओं को अपने विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। मुरा देवी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि बचपन में ही माताओं के द्वारा दिए गए संस्कारों का बहुत महत्त्व होता है। यही कारण है कि उस समय के लोगों को अपने अधिकारों का पूर्ण ज्ञान था कहीं किसी पर अन्याय होता था तो उसके विरुद्ध आवाज बुलन्द की जाती थी। 'भारत सम्राट' उपन्यास में स्थान–स्थान पर संस्कृति की महिमा का भी खुलकर गुणगान किया गया है। भारतीय संस्कृति सदैव से ही उपकार और सद्व्यवहार के लिए विश्वविख्यात रही है। सैल्यूकस अपनी सभ्यता और संस्कृति को भारतीय सभ्यता और संस्कृति से श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता है। लेकिन उसे हेलेन के भारतीय संस्कृति से प्रेम के आगे हार माननी पड़ती है, क्योंकि स्वयं उसकी पुत्री यूनानी सभ्यता से अधिक आदर भारतीय सभ्यता का करती है। भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषता विभिन्नता में एकता का होना है। प्राचीन काल से ही मनीषियों ने धर्म पर बल देते हुए समाज में उसकी अनिवार्यता घोषित की है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ उसी के साथ–साथ धर्म भी विकसित होता गया। धर्म सामाजिक एक्य एवं संगठन का सूत्र माना गया हे। 'भारत सम्राट' उपन्यास में हेलेन द्वारा धर्म की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। रात के समय हेलेन द्वारा गीता का पाठ करना, सैल्यूकस का क्रोधित हो जाना। हेलेन द्वारा गीता की महत्ता को प्रतिपादित

करना, भारतीय संस्कृति की महिमा का गुणगान लेखक का मुख्य उद्देश्य रहा है।

धार्मिक दृष्टि से कँवलनयन कपूर ने धर्म के अर्थ, स्वरूप व महत्त्व को प्रतिपादित किया है। धर्म मनुष्य के जीवन में आकस्मिक रूप से संबद्ध नहीं है, बल्कि आवश्यक एवं अवियोज्य रूप से संबद्ध है। धर्म की आवश्यकता मनुष्य के स्वरूप में ही अंतर्भूत है। मनुष्य असहाय एवं अपूर्ण होने के कारण किसी–न–किसी व्यक्ति की अपेक्षा करता है, जिससे उसकी कठिनाइयाँ दूर हो सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह धर्म का हृदयंगम करता है। 'इदं शरीरं', 'श्री दुर्गा' और 'उपनिषद श्री' में कँवलनयन कपूर ने श्रीमद्भगवद्गीता, मार्कण्डेय पुराण और उपनिषदों को आधार बनाया है। कर्म, ज्ञान, भक्ति, सद्गुरु, सांख्य योग, विषाद योग जीवात्मा, प्रकृति, आत्मतत्त्व, मोक्ष का वर्णन करते हुए कँवलनयन कपूर ने धर्म के स्वरूप को प्रतिपादित किया है। उनका मानना है कि धर्म कर्म का मार्ग ही मानव को मोक्ष प्रदान करता है जो व्यक्ति निष्काम कर्म करता है। उसका मन पवित्रा हो जाता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। जीवात्मा किसी भी वर्ण से सम्बन्धित क्यों न हो, यदि वह आसक्ति को त्याग कर अनासक्त भाव से निरन्तर कर्म करे तो वह निश्चय ही परमात्मा की अनुकम्पा को प्राप्त करता है और वही सच्चा कर्मयोगी भी बनता है। ज्ञानी पुरुष को चाहिए कि वह स्वयं तो निष्काम भाव से कर्म करे साथ ही अज्ञानियों को भी सद्मार्ग पर लाने का प्रयास करे। स्पष्ट है कँवलनयन जी ने धर्मिक दृष्टि से धर्म के स्वरूप को सफल अभिव्यक्ति दी है।

शिल्प–पक्ष की दृष्टि से की कँवलनयन कपूर का साहित्य सफल बन पड़ा है। इन्होंने विभिन्न भाषाओं के शब्दों, नये प्रतीकों, नये बिम्बों, मुहावरे लोकोक्तियों आदि का सुन्दर प्रयोग किया है। शिल्प में भाषा का महत्त्व सर्वोपरि रहा है। भाषा के अध्ययन का शब्दों के साथ गहरा सम्बन्ध है। यदि सटीक शब्द योजना हो तो साहित्यिक रचना के कलात्मक सौन्दर्य में तो वृद्धि होती ही है। साथ ही उसकी प्रभावोत्पादकता भी बढ़ जाती है। इन्होंने अपने कथ्य को समृद्ध बनाने के लिए तत्सम्, तद्भव, देशज, विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है। इन्होंने पात्रों और प्रसंगों के अनुकूल शब्दों का प्रयोग किया है, इनके शब्द भाषा को प्रवाहमयी बनाते हैं। लोक प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों के माध्यम से इन्होंने भाषा को जीवंत बनाया है। कथ्य में कहीं–कहीं आया सूक्ति का प्रयोग जीवन के सत्यों को उद्घाटित करता है। कँवलनयन कपूर के साहित्य की भाषा मुख्यतः प्रतीकात्मक है, इन्होंने भवाभिव्यक्ति की सुगमता के लिए विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया। इनके कुछ प्रतीक नए हैं तो कुछ पौराणिक हैं। इसी प्रकार इनकी बिम्ब–योजना भी अत्यन्त समृद्ध है। इन्होंने इनका प्रयोग बड़े लाघव एवं चातुर्य से किया है, परन्तु यह सजीव और स्वाभाविक है। शैली के आधार पर कँवलनयन कपूर का शिल्प पक्ष मजबूत है।

अतः कहा जा सकता है कि कँवलनयन कपूर आधुनिक हिन्दी साहित्य के चिन्तकों में अग्रण्य पंक्ति में खड़े होते हैं। उनका हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है। अपने कुशल चिन्तन के द्वारा उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध किया है। जहाँ वह राजनीतिक विसंगतियों का चित्रण करते हैं, वही धर्म की महत्ता व शिक्षा सुधार के माध्यम से नारी, ज्ञान, सद्गुरु के महत्त्व को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। 'इदं शरीरं', 'श्री दुर्गा' और 'उपनिषद श्री' अनुवादित साहित्य के माध्यम से उन्होंने धर्म के वास्तविक स्वरूप को रेखांकित किया है। वहीं ऐतिहासिक उपन्यास 'भारत–सम्राट' में उन्होंने ऐतिहासिकता और काल्पनिकता का समावेश कर चन्द्रगुप्त, चाणक्य, हेलेन और सैल्यूकस के चरित्र को सशक्त रूप से उभारा है। निःसंदेह कँवलनयन कपूर बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार है।

Corresponding Author

Pooja Rani*

Research Scholar, Ph.D. Hindi, South India Hindi Publicity Meeting, Madras

E-Mail –